ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 08-14
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

मोहनलाल
अतिथि संकाय सदस्य,
(विद्या संबल योजना),
राजकीय महाविद्यालय, बायतु,
शोधार्थी इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर.

Corresponding Author :

मोहनलाल
अतिथि संकाय सदस्य,
(विद्या संबल योजना),
राजकीय महाविद्यालय, बायतु,
शोधार्थी इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर.

श्री रामस्नेही संप्रदाय शाहपुरा की आचार्य परंपरा :-एक ऐतिहासिक अध्ययन

शोध सारांश :- विगत कुछ दशकों से विश्व के इतिहास लेखन को लेकर नवीन विधाओं का प्रचलन प्रारंभ हुआ है। जिनमें क्षेत्रीय इतिहास व संप्रदाय का स्वतंत्र लेखन महत्वपूर्ण है। भारत के इतिहास के दृष्टिकोण विभिन्न संप्रदायों का इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परन्तु विभिन्न क्षेत्रों तक पहले संप्रदायों की विवेचना करना अभी शेष है। इसी अनुक्रम में "श्री रामस्नेही संप्रदाय की आचार्य परंपरा," और सभी रामचरण की शिष्य परंपरा बड़ी अद्भुत रही है जो अध्यावधी पर्यंत चल रही है।

संकेताक्षर :- रामस्नेही, ग्रहस्थ, शील वृत्त, नामावली, साधना, सत्संग, अंतर्यामी, वैराग्य, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मलीन।

भिन्न -भिन्न स्थानों पर रामद्वारों की शिष्य परंपरा को 'थांभायत' नाम से संबोधित किया जाता है।

1. ग्रहस्थ शिष्य :-यह भली भांति स्पष्ट हो चुका कि रामस्नेही संप्रदाय में ग्रहस्थ।शिष्यों का विशिष्ट स्थान है।वस्तुतः पंथ -संचालन के लिए स्वामी रामचरण ने साधु और ग्रहस्थो को समान महता दी और पंथ -शकट केंद्रों पहिए के रुप में आज भी दोनों सम्प्रदायों की व्यवस्था सम्हाले हुए है। संभवतः इसीलिए स्वामी जी ने नवलराम को ग्रहस्थ होने के बाद भी बारह शिष्यों में स्थान दिया था। साम्प्रदायिक साक्ष्य ग्रंथों मे ग्रहस्थ शिष्यों की भी चर्चा है। शीलव्रत पंथ विकास की परम्परा में शीलव्रत का अपना एक विशिष्ट स्थान है। शीलव्रत ब्रह्मचर्य पालन को कहा जाता है। स्वामी रामचरण ने अपने शिष्यों को ग्रहस्थ जीवन में रहते हुए शीलव्रत धारण करने की प्रेरणा दी। शीलव्रत धारी व्यक्ति ग्रहस्थ वेश में भी साधु सदृश रहता है। अतः शीलव्रत धारियों की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थिति सम्प्रदाय में है।

2.शीलवृत कतिपय प्रमुख शिष्य :- देवकरण, कुशलराम और नवलराम जिन्होंने भीलवाड़ा संघर्ष में प्रमुख भूमिका निभायी थी। पहले शीलव्रत धारण करने वाले शिष्य थे।

स्वरूपाबाई:-यह स्वामी रामचरण जी के प्रमुख शिष्य नवलराम की पुत्री थी। 'गुरुलीला विलास" में जगन्नाथ ने स्वरूपाबाई की प्रशंसा करते हुए उसकी तुलना मीरां से की है।

3.कतिपय अन्य शिष्य :- 'गुरुलीला विलास 'मे जगन्नाथ ने कतिपय और शिष्यों की चर्चा की है। जिन्होंने शीलव्रत धारण कर जीवन को सफल बनाया है। सीता राम सेवाराम भूपसिंह शक्तावत आणदराम शंभु राम सांगरिया मुरधर की बजाबाई आदि के अतिरिक्त अर्जुनसिंह था।

4.द्वादश शिष्यों का जीवनवृत्त :-उनके जीवन वृत का उल्लेख भी आवश्यक है यथा-

1. श्री वल्लभ राम जी महाराज :-श्री वल्लभ राम जी महाराज का जन्म ज्ञात नहीं हो सका है। क्यों कि प्राचीन समय में ग्रंथ हाथ से लिखे जाते थे, प्रकाशन के अभाव मे पूरी खोज नहीं हो है पाती आशा है भविष्य में इनके बारे में खोज हो पायेगी

2.श्री राम सेवक जी महाराज (बड़ा):-रामसेवक जी के विषय मे किसी तरह की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नहीं होने से जीवनव्रत का परिचय नहीं दे पा रहे हैं।आपका देहावसान वि.संवत 1841मे कार्तिक पूर्णिमा को भीलवाड़ा में हुआ था।इनकी शिष्य परंपरा वर्तमान में उदयपुर में है।

3.श्री राम प्रताप जी महाराज :-श्री राम प्रताप जी का जन्म भीलवाड़ा जनपद के बाहरी ग्राम में वि संवत्1785 में हुआ।आप लाठी गौत्ररीय माहेश्वरी वैश्य थे।अपने नगर मे ही व्यापार करते थे।एक बार व्यापार कार्य हेतु भीलवाड़ाआये, वहां के व्यापारी स्वामी रामचरण जी के दर्शन एवं सत्संग श्रवण करने जाते थे। अतः व्यापारी लोग इन्हें भी सत्संग में ले गये, स्वामी जी के सत्संग को श्रवण कर इतने प्रभावित हुए कि आपने स्वामी जी के सामने दीक्षा मैंने की इच्छा व्यक्त की और वि. संवत 1817 में शिष्य बन गये। संतों के संग में रहने से हृदय में वैराग्य की भावना विकसित होती गयी। गुरु देव का सत्संग श्रवण कर गुरु देव की आज्ञा पाकर आप 'राम धर्म' के प्रचारारथ राजस्थान में ढुढाड क्षेत्र की तरफ चले जहा आप महानपुर जयपुर होते हुए सवाईमाधोपुर आये एवं सत्संग प्रारंभ किया।वि. संवत1825गीरषम ऋतु में आप यहां पधारे थे। चातुर्मास का समय समीप आने के कारण आप प्रस्थान करने लगे तब सवाईमाधोपुर के भक्तों ने आपसे यही चातुर्मास करने की प्रार्थना की तब आपने चातुर्मास वहीं किया। स्वामी जी से प्रभावित होकर भारजा नगर के एक सेठ व उसकी बहन ने आपके निवास हेतु सवाईमाधोपुर में रामद्वारा का निर्माण करवाया। प्रचार का क्षेत्र बढ़ने लगा।

स्वामी राम प्रताप को महन्त बनाने के बाद सवाई माधोपुर भारजा सहित ढुढाड हाडोती शेखावाटी और मेवात आदि क्षेत्रों में रहने वाले संतों ने मान्यता दी। स्वामी राम प्रताप के अंतिम समय में विचारों में परिवर्तन आया और अपने शिष्यों से कहा कि आप लोग शाहपुरा जाना और स्वामी रामजन को आचार्य मानना। वि. संवत 1857 में भारजा के रामद्वारा मेआपने अपना पंचभौतिक शरीर त्याग दिया।

स्वामी राम प्रताप बड़े नीति निपुण व्यावहारिक और अच्छे संगठन करता महापुरुष थे, उन्होंने राजपूताना के विभिन्न क्षेत्रों में राम धर्म का प्रचार किया, अनेक लोग आपके शिष्य बने। आपके विरक्त शिष्यों की परंपरा में चार संतों की परंपरा वर्तमान में 1. संत श्री लच्छीरामजी 2. संत श्री हरि बल्लभ जी 3. संत श्री राम लोचन जी 4.संत श्री शीतल दास जी श्री लच्छीरामजी राम ने स्वामी राम प्रताप की वाणी का संपादन किया और अंतिम समय तक सेवा में रहे संत श्री लच्छीरामजी राम के समय से स्वामी राम प्रताप की पुण्यतिथि पर 15 दिन के मेले का आयोजन चल आ रहा है।

4. श्री चेतन राम जी महाराज:-आपका जन्म जयपुर राज्य की रेनवाल नगर में विक्रम संवत 1790 को हुआ

था। यह वैष्णव जाति में उत्पन्न हुए थे आप ग्रस्त जीवन में रहते हुए भी प्रभु स्मरण किया करते थे मन में वैराग्य जाग्रत हुआ तब गुरु की खोज में चलते हुए भीलवाड़ा पहुंचे, या आपको स्वामी रामचरण जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्तहुआ और सत्संग श्रवण से प्रभावित होकर वैराग्य लेने का आग्रह किया स्वामी जी ने देखा कि एक युवा व्यक्ति खड़ा है चेतन करके ईश्वर भजन का आदेश दिया इसी से इनका नाम चेतन दास हो गया विक्रम संवत 1819 में आपने स्वामी जी से दीक्षा ग्रहण की एवं राम भजन और स्वाध्याय करने लगे।

जब स्वामी रामचरण भीलवाड़ा से शाहपुरा आए तब संत चेतन दास जी उनके साथ शाहपुरा जाकर सेवा में रहे तदनंतर गुरु आज्ञा लेकर राम धर्म के प्रचार हेतु राजस्थान के हाडोती क्षेत्र की तरफ प्रस्थान किया भ्रमण करते हुए आप कोटा पहुंचे और वहां अपनी साधना स्थली बनाई। संतों के भजन एवं सत्संग के प्रभाव से आपकी ख्याति हाडोती क्षेत्र के अन्य स्थानों पर फैलने लगी।तत्कालीन कोटा नरेश ने स्वामी जी के निवास हेतु दशहरा मैदान के समीप रामद्वारा बनाया।

स्वामी चेतन दास जी का जीवन उच्च कोटि का था। एक बार आप बीमार हो गए तो गुरु दर्शन के लालसा जागृत हुई गुरुदेव एंड अंतर्यामी थे। अंतः शिष्य को दर्शन देने कोटा पधारे स्वामी चेतन दास परम प्रसन्न हुए पुनः गुरुदेव लौटने लगे तब श्री चेतन दास भी इनके साथ प्रस्थान करने लगे गुरुजी ने कोटा में रहने का आदेश दिया कोटा के महारावल दर्शन हेतु आते ही थे यदा-कदा महारानी जी भी दर्शन सत्संग लाभ लेने आती थी महारानी जी ने उनके दिए विमान बनाया क्योंकि आप बहुत बीमार हो गए थे परंतु स्वामी जी ने विमान देखकर कहा कि इसे गुरु जी के पास शाहपुरा भेज दो। कहते हैं स्वामी रामचरण के ब्रह्मलीन होने पर इस विमान का प्रयोग हुआ।

स्वामी जी अधिक आयु प्राप्त न कर सके विक्रम संवत 1834 फाल्गुन कृष्ण 8 को कोटा में शरीर छोड़ा आपकी समाधि राम द्वारा परिसर में बनी हुई जिसके कई चमत्कार मिलते हैं आपकी शिष्य परंपरा में आज भी संत विधयमान है।

5. संत श्री कान्हड़दास महाराज :- आपका जन्म भीलवाड़ा के पास रिछडा ग्राम में हुआ, इनको स्वामी रामचरण के दर्शन अपने गांव में ही हुए। सांप्रदायिक मत प्रचलित है की एक बार स्वामी रामचरण रीछडा गांव के पास से जा रहे थे। लोगों ने कहा महाराज यह गांव निगुरा है, संतों का अपमान होगा तो स्वामी जी ने कहा भाई संत न मान से प्रश्न होते हैं ना अपमान से नाराज ऐसा कहते हुए आप ग्राम में प्रवेश कर गए ग्राम छोटा ही था वह आज भी छोटा ही है संतों का आगमन सुनकर कुछ लोग एकत्रित हुए यह संख्या में 17 थे परंतु स्वामी जी के दर्शन का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह 17 स्वामी जी के विरक्त शिष्य बन गये इन्ही में से एक श्री कानहडदास जी थे।

स्वामी रामशरण के कान्हड़दास जी नाम के दो शिष्य हुए यह कानहड दास जी बड़ा के रूप में प्रसिद्ध हुए उनकी दीक्षा तिथि अज्ञात है परंतु अनुमान से विक्रम संवत 1819 से 1824 के बीच मानते हैं जब स्वामी रामशरण शाहपुरा से पूर्व भीलवाड़ा में निवास करते थे उसी समय से आप गुरुजी के पास रहते थे। कुछ समय पश्चात गुरु आज्ञा से राम धर्म प्रचारथ बागड़ आदि क्षेत्र में भ्रमण किया।आप सागवाड़ा में विराजे, यही पहाड़ी पर रहकर रामभजन करने लगे।इनके शिष्य संत श्री परमल राम जी हुए हैं जो कि लेखक व वाणी के ज्ञाता थे और दूसरे शिष्य संत श्रीभूधरपदास जी ने वाणी का संपादन किया।

6. श्री द्वारिकादास जी महाराज :- स्वामी रामचरण के प्रमुख शिष्यो में श्री द्वारिका दास जी को अवधूत के नाम से जाना जाता है। आपका जन्म मध्य प्रदेश के मालवा अंचल के मोडी ग्राम में हुआ। आपका जन्म काछेला चारण जाति में हुआ था। आपका पूर्व नाम देवीदान था। आप एक बार अपने व्यवसाय हेतु भीलवाड़ा आए वहां स्वामी रामचरण के दर्शन किए और हरी भक्ति का उपदेश लग गया जिससे इनके हृदय में वैराग्य भाव भाव उत्पन्न हुआ। और स्वामी जी

के शिष्य बन गये। तथा आपका नाम द्वारिका दास हो गया। आप साधना मे तल्लीन हो गये। इन्हे अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती थी।इस कारण आप निर्वसन रहने लगे परन्तु बाद में गुरु जी की आज्ञा से कौपीन धारण करने लगे। स्वामी रामचरण ने इन्हें मालवा क्षेत्र में राम धर्म के प्रचारार्थ भेजा तभी से आप इस क्षेत्र में विचरण करते रहे। मोडी नगर जहां इनका जन्म स्थान था वहां भी रामद्वारा बना।

7. श्री भगवान दास जी महाराज:-स्वामी भगवान दास जी का जन्म विक्रम संवत 1801 आश्विन शुक्ल 14 शनिवार को पिपाड नगर जो कि जोधपुर जनपद में है, में हुआ था। के पिता का नाम दामोदर जी और माता का नाम लक्ष्मीबाई था। आप पिपाड के पास घाणा मगरा के पास रहने वाले थे। ब्राह्मणों में आपका नाम भगवान जी रखा। बाल्यावस्था में अच्छा विद्या अध्ययन किया बड़े होने पर इनका विवाह हेतु संबंध भी कर दिया परंतु विवाह पूर्व कन्या का निधन हो गया पिताजी ने व्यवसाय हेतु उनके बड़े भाई दासराम जी के साथ दक्षिण में भेजा पर सफलता नहीं मिलने पर भीलवाड़ा आ गये।

स्वामी रामचरण इन दिनों भीलवाड़ा में विराजमान थे उनके बड़े भाई सत्संग में जाया करते थे एक बार दोनों भाई बावड़ी पर स्नान करने गए वहां बड़े भाई ने जल छानकर स्नान किया भगवान जी ने पूछा कि यह ज्ञान अपने कहां से पाया तब बड़े भाई ने स्वामी रामचरण का नाम बताया तो भगवान जी भी भाई के साथ दर्शनार्थ गये।स्वामी जी से प्रभावित होकर राम धर्म स्वीकार किया।यह घटना विक्रम सामान 1820 की है इस समय घर से विवाह हेतु पत्र आया आपका मन उदास हो गया इतने में उनके मित्र मुरलीधर जी जो कि वहां व्यापार करते थे आए और इनसे चर्चा हुई तब दोनों ने विरक्त होने का मन बना लिया वह नगर से निकल पड़े और भगवान जी ने विक्रम संवत 1823 में आश्विन शुक्ला में गुरु जी से दीक्षा प्राप्त करली। कुछ समय बाद अपने मरुधर प्रदेश की यात्रा प्रारंभ की। सबसे पहले भेरुंदा आये तब इन्हें विजय राम, पोकर दास, मणियार मिले।

वि. संवत 1859 श्रावण कृष्णा 14 की रात्रि में सत्रह संत जो स्वामी जी की सेवा में थे उनको अपनी पर को की यात्रा की चर्चा की थी तीन दिन बाद विक्रम संवत 1807 श्रावण शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार को डेट पर प्रतीत होने पर अपने राम नाम का स्नान करते हुए के शरीर का परीक्षा कर दिया जीवनी ग्राम में इस धरती के बाद का संस्थापक का सफर भी का वर्णन किया है स्वामी भगवान दास लेने के बाद राजस्थान गुजरात मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश की राजस्थान में भ्रमण कर ग्राम धर्म का प्रचार किया और अनेक ग्राम द्वारा निर्माण हुआ कि मैं जोधपुर का बड़ा रामद्वारा मन मंदिर का रामद्वारा पोकरण देवी देवगढ़ जैतारण सूरत आगरा चावल नंदलाल कम खड़ी आदि प्रमुख है

8. श्री देवादास जी महाराज :- स्वामी देवदास का जन्म विक्रम संवत 1811 चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ग्राम बीगोद जिला भीलवाड़ा जाति में उत्पन्न हुए विक्रम सराभा 1825 में आप स्वामी से भीलवाड़ा में शिक्षा ग्रहण कर राम नाम के छात्र में नींद रहने लगे उच्च वर्षों बाद राम धर्म के प्रचार हेतु आप मारवाड़ हाडोती तथा मेवाड़ में भ्रमण करते हुए जोधपुर पधारे कानपुर के पार विद्यासाला के पीछे करते हुए इस स्थान को अपने साधन इसलिए बनाया।

जीवनदंती के अनुसार आप अपने गुरु भाई स्वामी भगवान दास जी के साथ जोधपुर में राम भजन करते थे उन्हें दिनों में वहां के तत्कालीन राजा ताकत सिंह जी एवं उनकी रानी को संतों की जानकारी प्राप्त हुई तब राजा रानी दोनों ही 10 लाख आई उसे समय श्री भगवान दास जी धर्म प्रचारक भ्रमण पर गए हुए थे और देव दास जी वहां मौजूद थे आपके भाव व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राजा ने आपके निवास हेतु राम द्वारा बनाया इसके बाद आप धर्म प्रचारक ढूंढा प्रदेश की तरफ पधारे और गुड़ा ग्राम में निवास किया वह वहीं रहकर अपने वाणी की रचना की

स्वामी देव दास के शिष्य श्री हरिराम के

अनुसार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वामी जी ने विक्रम संवत 1828 में गुदा में रहकर ज्ञान भक्ति वैराग्य तथा ब्रह्म देश की चर्चा वाणी में की प्रसाद स्वामी जी का विवाह सॉन्ग ग्राम सभा जिला चित्तौड़गढ़ में विक्रम सामान 1844 शुक्ला पारस रविवार को प्रार्थना समय में हुआ वहीं पर आपकी समाधि समाधि छतरी के रूप में बनी है।

स्वामी राम चरण के परम भक्त जगन्नाथ जी सोनी माहेश्वरी जिन्होंने अपने गुरुदेव के संबंध में जो प्रत्येक जानकारी मिली उसे उन्होंने लिपिबद्ध किया था जो कि आज के समय में अटका के प्रमाण माना जाता है इन्हीं सोनी ने स्वामी देव दास की अंतिम समय की चर्चा की अपनी लेखनी से उपदेश की है कि मैं जैसा देखा वैसा ही सच-सच गए अपने अपने देश के द्वारा उनके वक्त की है इसलिए होता है कि स्वामी देवदास के दिव्य और शाम के समय जगन्नाथ सोनी उपस्थित थे आप सवा ग्राम में केवल 10 दिन रहे इस काल में आपने अपना शरीर छोड़ दिया।

9. श्री मुरली राम जी महाराज:- स्वामी मुरली राम जी का जन्म राजस्थान प्रांत की मारवाड़ आंचल में मेड़ता नगर में हुआ था उनके पिता का नाम रामनाथ जी को माता का नाम गंगा देवी था आप घर गोत्री अग्रवाल थे आपका जन्म विक्रम सम्राट 1802 मार्ग कृष्ण सप्तमी मंगलवार का हुआ आपका नाम मुरलीधर रखा गया बाल्यावस्था सुख सुविधा पर वर्जित कर साथी पढ़ लिखकर विद्वान हो गई व्यापार हेतु भीलवाड़ा जाकर अपना व्यवसाय बढ़ाया।

एक दिन मुरली धरती अपने मित्र नवल राम के पास के यह स्वामी रामचरण के परम भक्त शिष्य थे उसे समय नवल राम जी गुरु महाराज द्वारा उचित चिंतामणि ग्रंथ का पाठ कर रहे थे मुरलीधर ने कुछ पतियों से नहीं और पूछा यह सब किसने कही है नवल राम ने स्वामी जी का नाम बताया तो दर्शन की अभिलाषा जागृति ने कहा कि गुरु जी शाहपुरा में मुरलीधर ने शिष्य बनने को आतुरता दिखाई दावल राम जी ने कहा कि आप ग्रस्त जीवन में रहकर भी भक्ति कर सकते हो मुझे भी गुरु जी ने यही आज्ञा दी है पर तो मुरली दर्जी ने तो पक्का विचार कर लिया था सोचा गुरु जी शिष्य बनेंगे या नहीं आता शाहपुरा जाते समय खराब समय रूपाहेली नगर में स्वयं साधु बेस्ट धारण कर गुरु चरणों में शाहपुर पहुंच गई स्वामी जी ने उनकी पूरी परीक्षा ली और विक्रम संवत 1826 वैशाख शुक्ल पंचम को अव काश सूची बनाकर मुरली राम नाम रखा।

अपने पूज्य गुरुदेव के चरणों में वह समय रहकर अपने को परखा और गुरुदेव से आशीर्वाद लेकर धर्म प्रचार निकल पड़े संप्रदाय के सूत्रों के अनुसार आपके साथ को संत भी चले सर्वप्रथम भीलवाड़ा जिले में ब्लू नगर में पधारे प्यास लगी किसी से हुआ बावड़ी का रास्ता पूछा तो उसने सुखी बावड़ी बता दी आपको बड़ा दुख हुआ प्रभु से प्रार्थना की पता नहीं आकाश में कहां से बदल जाकर बरस गए और बावड़ी में पानी आ गया लोगों को आचरण हुआ तभी से उसका नाम मुरली सागर हुआ

एक समय भ्रमण करते हुए मथुरा पधारे वहां आपका पंडितों से शास्त्र का परिवर्तन हुआ वहीं भरतपुर राज्य के प्रधान की उपस्थित थे उन्होंने स्वामी जी से भरतपुर प्रधान की प्रार्थना की आप वह पधारे स्वामी जी बड़े सड़क शांत रहें चमत्कार होते देखा तब उसे भगवत कृपा मन यहां पर आपके भाई आत्माराम जी व्यापार करते थे उनके घर में चोरी हो गई सारी घटना जाकर स्वामी जी को बताइए उत्तर मिला की दुखी मत होइए आपका ध्यान यमुना की रेती से पूर्व दिशा में रखा है परंतु स्वामी जी ने कहा कि कुछ धन पर मार्च में लगाओ डर मिला तब आत्माराम जी ने इस धन से भीलवाड़ा रामद्वारा की बावड़ी बनवाई।

इस क्षेत्र से चलते-चलते आप ब्रह्मा की राजधानी रंगून पधारे परंतु गुरु आज्ञा थी कि वह अधिक नहीं रहना होना वहां से लौटकर राजस्थान में राजस्थान के मारवाड़ प्रांत का भ्रमण करते हुए आप बालोतरा पाली वह बाड़मेर राजस्थान पर राम भक्ति का संदेश देने लगे पाली में छतरी में आप भजन कर रहे

थे कि किसी ईश्वर व्यक्ति ने मन मोद सलाई नोट छतरी पर गिरी सजा टूटा पर तो आप सुरक्षित रह गए बाद में भक्तों ने राम द्वारा बनाया आप वहीं पर एक खेतड़ी वृक्ष के नीचे बैठकर तब चेक करने वालों की खेजरी आज भी पूज्य मानी जाती है

स्वामी मुरलीराम ग्रहस्थ जीवन का त्याग कर संत बन गए थे रायपुर मारवाड़ में आपका ससुराल था भ्रमण करते-करते राय पूरी पधारे कई वर्षों तक यहां साथ नरत रहे इसी बीच अपने अनुभव वाणी का उच्चारण किया इसकी सब संख्या 16000 है अनंत राम भजन करते हुए विक्रम साउथ 1857 भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा को अपने रायपुर में अपनी पांच भौतिक लीला का श्रवण किया दाह संस्कार के समय आपके शरीर पर जो कंबल गुरु प्रसाद रखी गई थी वह आग में नहीं चली और आज भी सुरक्षित है।

आपका अधिकांश समय रायपुर में बिता आपके बाद भक्तों ने राम द्वारा निर्माण कराया और निश्चय किया कि प्रत्येक फाल्गुन मास्टर मासी पर या संत सम्मेलन हो क्योंकि चातुर्मास में पुण्यतिथि होने पर संत नियम में बंद होने के कारण ए नहीं सकते हैं आपके पास स्थल पर चबूतरा बनाया स्वामी जी के 40 शिष्य हुए जिनमें छः शिष्य प्रमुख गिने जाते हैं जिनकी परंपरा आज भी चल रही है 1.श्री उदासीराम जी 2. प्रेम प्रतित जी 3 श्रीहरिराम जी 4. श्री गंगाराम जी 5. श्री सहजराम जी6. श्री साधुराम जी

10. श्री तुलसीदास जी महाराजः- स्वामी तुलसीदास जी का जन्म भीलवाड़ा के सांवरिया नगर में हुआ था बाल्यावस्था से आपकी भावना वैरानगी की तरफ अधिक थी सांसारिक कार्यों से मन व्यक्त हो गया था आपने भीलवाड़ा में स्वामी रामचरण से दीक्षा ग्रहण की आप में गुरु भक्ति अपार थी परंतु आपने अपना साधन धाम सकतपुर को बनाया स्वामी तुलसीदास ने अपना अधिक समय राम धर्म के प्रचार में विभिन्न स्थानों पर जाकर भक्ति धारा को प्रभावित करने में लगाया आपका अलौकिक शरीर मार्ग से शुक्ला 13 विक्रम संवत 1885 को ब्रह्मलीन हुआ और विक्रम संवत 1896 में आपकी समाधि शाहपुरा में बनी जो पूर्व समाधि के नाम से विख्यात है उनके शिष्य जोगीराम जी अच्छे वाणीकार हुए अब उनकी परंपरा में कोई संत नहीं है साधना स्थल आज भी सुरक्षित है।

11. श्री रामजनजी महाराज :-स्वामी जी का जन्म विक्रम संवत 1806 में भीलवाड़ा जिले की सिरसिया नगर में हुआ यह माहेश्वरी वैशय सकुल में लढा गोत्रीय थी। विक्रम संवत 1820 में भीलवाड़ा में स्वामी रामचरण का शिष्य तो ग्रहण किया और आप अपने संत जीवन में अधिक समय तक गुरु जी की सेवा में रहे गुरुदेव के परमधाम गमन के बाद विक्रम संवत 1855 में वैष्णव शुक्ला एकम को शाहपुरा में सभी संतों एवं भक्तों ने मिलकर आपको उत्तराधिकारी बनाया अथवा स्वामी रामचरण जी रामसनेही संप्रदाय के प्रवर्तक संस्थापक कहलाये एवं स्वामीरामन जी संप्रदाय की प्रथम आचार्य बने परन्तु शाहपुरा आचार्य शिष्य धर्म परंपरा स्वामी रामचरण ने पहले ही प्रारंभ कर दी थी 12 वर्ष तक सफल संचालन के बाद विक्रम संवत 1867 आषाढ़ कृष्ण 11 को वही परमधाम पधारे इस अवधि में अपने दो चातुर्मास शाहपुरा से बाहर मेड़ता में किये इसके अलावा भी कई बार राम धर्म के प्रचार प्रसार हेतु भ्रमण किया था सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद, ग्वालियर, सीकर में आपके रामद्वारे हैं।

12. श्री नवल राम जी :- श्री नवल राम जी का जन्म राजस्थान के भीलवाड़ा नगर में हुआ था आप महेश्वरी जाति में मंत्री गोत्र में उत्पन्न हुए आपके पिता का नाम सदाराम जी दादाजी जी का नाम वेणीराम जी था नवल राम स्वामी रामचरण की तीन प्रमुख ग्रहस्थ शिष्यों में से एक थे। अन्य दो के नाम श्री देवकरण जी तोषनीवाल एवं कुशल राम जी बिडला था। विक्रम संत 1817 में स्वामी जी द्वारा रामस्नेही संप्रदाय की स्थापना होने के समय यह तीनों ही आपका शिष्य बने आपके जन्म का संवत ज्ञात नहीं है परंतु जब यह स्वामी जी के शिष्य बने तब इस समय शीलवरत भी धारण कर लिया था। तब उनकी आयु मात्र 21 वर्ष की और पत्नी गर्भवती थी बाद में कोई पुत्री हुई

जिसका नाम रामस्वरूप भाई रखा गया था। अतः यह अनुमान हुआ कि नवलराम जी का जन्म वि संवत 1796 मे हुआ था।

आप प्रखर बुद्धि विद्या एवं गुरु के प्रति श्रद्धा एवं सेवा भावना के फल स्वरुप श्री नवल राम जी रामसनेही संप्रदाय के महत्वपूर्ण अंग हो गए।साधुवेश धारण न करने पर भी इन्हें 'बारह थामबे के साध "में स्थान दिया गया है।दादश शिष्यों में 11 संत एवं एक मात्र श्री नवलराम ग्रहस्थ थे। श्री नवलराम जी की पुत्री स्वरूप बाबा का विवाह हुआ परन्तु पतिदेव से विचार न मिलने पर उनका परित्याग कर अपने पिता के पास आ गई और स्वामी रामशरण जी की शीलवरता शिष्य बन गई।श्री नवल राम के दोनों भाई पाथूराम जी एवं रूप राम जी ने स्वामी रामचरण के अंतिम संस्कार के समय श्री शीलव्रत धारण किया। अतः यह कहा जा सकता है कि श्री नवराम का पूरा परिवार रामस्नेही था। श्री नवलराम ग्रहस्थ रूप में भी संत थे उन्होंने अपने काव्य रचना के साथ-साथ स्वामी राम शरण की अणभैवाणी के अंगबदध संपादन का महत्वपूर्ण कार्य किया 25 वर्ष तक अपने गुरु जी को एवं रामस्नेही संप्रदाय की सेवा कार्यक्रम 1842 चैत्र कृष्णा 5 सोमवार को मध्यहानन वेला में भीलवाड़ा में यात्रा का समापन किया।

श्री चेतनदास के शि रामबल्लभ ने इनके अंतिम समय के वर्णन के साथ ही गुणों का वर्णन किया श्री नवल राम सत्संग प्रेमी थे। इनके अंतिम समय की तिथि पंचमी थी वह फूलडॉल का समय था, दूर-दूर से भगत आए हुए थे सभी से मिलकर संसार से प्रयाण किया।"

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ मोतीलाल मेनारिया राजस्थान का पिंगल साहित्य प्रश्न संख्या 201 -203.
2. मेरे तो गिरधर गोपाल भर चंद्र कुमार सिंघल भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर 2008.
3. रामस्नेही संप्रदाय डॉ राधिका प्रसाद त्रिपाठी फैजाबाद.
4. रामसनेही मत दिग्दर्शन पंडित उत्साह राम प्राणाचारय श्री साहित्य प्रकाशिक समिति खेड़ापा 1962.
5. रामस्नेही संत स्वामी देवादास व्यक्तितव एवं कृतित्व -डॉ शैलेंद्र स्वामी.
6. श्री रामस्नेही संप्रदाय वैद्य केवल रामस्वामी व अन्य आयुर्वेद सेवा निकेतन ट्रस्ट बीकानेर.
7. स्वामी श्री राम चरण की अनुभवाणी सानुवाद प्रथम भाग संपादक मंडल संत अमरतराम पुष्कर 2015.
8. उपनिषदों की भूमिका डॉक्टर एस राधाकृष्णन.
9. काव्य कला और शास्त्र डॉ. रागैय राघव.
10. निर्गुण धारा डॉक्टर बैजनाथ विश्वनाथ ब्रह्मचारी.
11. पंचरत्न स्त्रोत संत गगन राम रामस्वरूप बाड़मेर रामसनेही युवा संत परिषद.
12. स्वामी चेतन दास व्यक्ति वाणी विचार एवं शशि परंपरा बृजेंद्र कुमार सिंह उत्तम राम कमल राम चेतनावर इंदरगढ़ 2015.
13. स्वामी मुरली राम की वाणी संपादन संपादक मंडल साधु पंचायत ट्रस्ट रायपुर 2001.
14. स्वामी गिरधर दास जी की वाणी संत अमरतराम संतराम शरण जोधपुर विक्रम संवत 2067.
15. स्वामी मुरली राम की परंपरा रायपुर पाली ब्यावर सदर के द्वारा भंडार बाड़मेर बालोतरा समदड़ी सिरोही जालौर राजस्थान.
16. स्वामी तुलसी दास की परम पर खेतोलाई खानपुर छीपाबड़ौद छाबड़ा शेरगढ़ चोरड़ा राजस्थान.
17. स्वामी जीवनदास परंपरा नागौर को शीतल मुंडवा अकेली नाथद्वारा लाडनूं पुष्कर राजस्थान.
18. रामस्नेही भास्कर संपादक मंडल श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट शाहपुरा.
19. नवल सागर संपादक बृजेंद्र कुमार सिंघल रामसनेही युवा संत परिषद वर्ष-3, अंक 4.
20. श्री रामसनेही संदेश संपादक श्री बृजेंद्र सिंहल रामस्नेही संत परिषद वर्ष-1, अंक-1.